बालभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा – पंचम् दिनांक -17- 01-2021

विषय -हिन्दी विषय शिक्षक -पंकज कुमार

एन, सी, ई, आरटी, पर आधारित

सुप्रभात बच्चों आज हिन्दी व्याकरण के बारे में पुनः अध्ययन करेंगे।

बोली – भाषा का मौखिक रूप बोली कहलाता है। यह सीमित अथवा बहुत कम क्षेत्रों में बोली जाती है। इसमें साहित्य की रचना नहीं की जाती है। मैथिली, राजस्थानी, बुंदेलखंडी आदि कई बोलियाँ है जिनका प्रयोग भारत के विभिन्न भागों में किया जाता है।

लिपि – मुख से निकली ध्वनियों को लिखने की विधि या चिह्न को लिपि कहते हैं।
संसार की विभिन्न भाषाओं को लिखने के लिए अनेक लिपियाँ प्रचलित हैं। संस्कृत, हिंदी, मराठी, भाषाएँ देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। हिंदी भाषा की लिपि देवनागरी है।

व्याकरण – भाषा को शुद्ध रूप में लिखना, पढ़ना और बोलना सिखाने वाला शास्त्र व्याकरण कहलाता है।
व्याकरण में भाषा के वर्ण, शब्द, पद तथा वाक्य पर विचार किया जाता है। इस आधार पर इसके चार अंग होते हैं।

1. वर्ण विचार
2. शब्द विचार
3. पद विचार
4. वाक्य विचार

1. वर्ण विचार – भाषा की सबसे छोटी ध्वनि वर्ण कहलाती है।
2. शब्द विचार – वर्णो के सार्थक मेल को शब्द कहते हैं।

. पद विचार – वाक्य में प्रयुक्त होने पर शब्द को ही पद कहते हैं; जैसे-नेहा दूध पीती है। गाय घास खाती है।

वाक्य विचार – एक ऐसा शब्द समूह जिसका अर्थ या भाव पूरा-पूरा समझ आ जाए, उसे वाक्य कहते हैं; जैसे-ओजस्व किताब पढ़ता है।

वाक्य के भाग – वाक्य के दो भाग होते हैं-उद्देश्य और विधेय।
उद्देश्य – जिसके विषय में कुछ कहा जाए उसे उद्देश्य कहते हैं; जैसे–अंशु सेब खाती है। अंशु उद्देश्य है।
विधेय – जब उद्देश्य के विषय में कुछ कहा जाए उसे विधेय कहते हैं; जैसे–अंशु सेब खाती है। इस वाक्य में अंशु के विषय में कहा गया है कि अंशु सेब खा रही है। अतः वाक्य का यह भाग विधेय है।

हमें किसके द्वारा भाषा के शुद्ध रूप का ज्ञान होता है?
(i) शब्द
(ii) लिपि
(iii) व्याकरण
(iv) वाक्य

. भाषा का अर्थ है
(i) मन के भाव संकेत के द्वारा प्रकट करना
(ii) मन के भाव केवल बोलकर प्रकट करना
(iii) मन के भाव केवल लिखकर प्रकट करना
(iv) मन के भाव बोलकर या लिखकर प्रकट करना